वैशाख की चौथ माता की कहानी PDF

एक गाँव में एक विधवा माँ और उसका बेटा रहते थे। वह गायों को चारा खिलाकर अपना भरण-पोषण करता था। उनकी मां बारहमासी चौथ माता का व्रत करती थीं। वे हर महीने विनायक चौथ पर चूरमा के पांच लड्डू बनाती थीं। उनमें से एक चौथाई माता को, एक गणेश जी को, एक गाय को, एक पुत्र को खिलाती है और एक स्वयं खाती है।

जब वैशाख के महीने का चौथ था, तो बेटा चूरमा देखकर पड़ोसी के घर गया और पूछा, तो वह बोली, आज वैशाखी चौथ है, इसलिए मैंने चूरमा बनाया है। तुम्हारी माँ हर चौथ पर बहुत सारे लड्डू बनाती है लेकिन खाने के लिए एक ही लड्डू देती है। ठंडी बासी रोटी खाने को देता है।

लड़का पड़ोसन की बातों में बहक गया और अपनी माँ से बोला, माँ, तू चूरमा खा ले और मुझे एक ही लड्डू दे। इसलिए चौथ माता का व्रत बंद कर देना चाहिए। मां ने कहा बेटा मैंने चौथ माता का व्रत रखा है, मैं तुम्हारी सुख-शांति के लिए ही करती हूं। मैं यह व्रत नहीं छोड़ सकता। यह सुनकर बेटा गुस्सा हो जाता है और विदेश जाने लगता है, मां बोली बेटा अगर मुझसे नाराज होकर विदेश जाना है तो मां की आंखें अपने साथ ले जाओ। यदि आप पर कोई संकट आए तो चौथ माता और विनायक जी का नाम लेकर फेंक दें। आपकी परेशानी दूर होगी।

pdfinbox.com

लड़का अपनी आँखों से परदेश चला गया। रास्ते में उसे खून से भरी एक नदी मिली जिसे पार करना संभव था। लेकिन उस संकट की घड़ी में उन्होंने अपनी मां को याद किया और चौथ माता के नाम से एक अखाड़ा लिया और उस नदी में डाल दिया और कहा, चौथ माता, अगर तुम सच्ची हो और मेरी मां मेरे लिए तुम्हारा व्रत रखती है, तो यह नदी दूध और पानी देंगे। से भर गया और मुझे रास्ता मिल गया, वह ऐसा कहता है, मुझे रास्ता मिल गया। आगे बढ़ने पर उसे उसी प्रकार भरे हुए नेत्रों से घोर वन के बीच से गुजरना पड़ा। एक नगर में पहुंचकर उस राजा के यहां प्रतिदिन मिट्टी के बर्तन का अलाव पकाया जाता था। उस अलाव को तब पकाया जाता था जब उसमें एक आदमी की बलि दी जाती थी।

यानी बर्तनों के साथ-साथ एक आदमी को चुना गया। उस लड़के ने वहाँ जाकर देखा कि एक बूढ़ी माँ आटा पीस रही है और रो रही है। लड़के ने इसका कारण पूछा, तो बुढ़िया ने कहा कि आज इस अलाव में जाने वाले मेरे इकलौते बेटे का नंबर है। तब लड़के ने कहा, बुढ़िया माँ, तुम जल्दी से खाना खिलाओ, मैं तुम्हारे बेटे की जगह जाऊँगा। मना करने पर भी बूढ़ी मां नहीं मानी और राजा के बुलाने पर अपना सामान बुढ़िया के घर छोड़ गई। इसके साथ ही उन्होंने उस अलाव में चौथ माता की आंखें और एक गिलास पानी अपने पास रखा और चौथ माता का नाम लेकर बैठ गए। अगले दिन अलाव पक कर तैयार हो गया। लोग बड़े हैरान हुए। लोगों ने जाकर राजा को यह बात बताई।

तभी राजा ने स्वयं आकर देखा कि अलाव से बर्तन निकाले जा रहे हैं, तभी अंदर से आवाज आई, धीरे से बर्तन हटाओ, मैं अंदर हूं। तब राजा ने आवाज सुन कर कहा, "आखिर तुम अंदर कौन, एक भुत या एक देवता"। तब लड़के ने कहा, “मैं वही लड़का हूँ जिसे तुमने कल अलाव में चुना था।

pdfinbox.com

लड़का बाहर आया। बाहर आने पर बूढ़ी माता और राजा के पूछने पर उसने कहा कि यह सब चमत्कार मेरी चौथी माता बिन्दायक जी के व्रत के कारण हैं। मेरी माता मेरी रक्षा के लिए व्रत करती है, आज उनके प्रताप से मेरा यह घोर संकट दूर हो गया है। राजा को विश्वास नहीं हुआ। फिर राजा ने दो घोड़े मंगवाए, एक पर खुद बैठा, दूसरे पर लड़के को बिठाया और उसके हाथ-पैर में जंजीर बांध दी और कहा, तेरी चौथी मां सच्ची है तो ये जंजीर मेरे हाथ-पैर में आ जाए। .

लड़के ने चौथ माता का ध्यान करके गणेश कहा है ! हे प्रभु, आप ही मेरी रक्षा करें। इतना कहते ही भगवान की कृपा से वे जंजीरें राजा के हाथ से खुल गईं। चौथ माता के चमत्कार को राजा, रानी और प्रजा ने अपनी आंखों से देखा। उसी दिन से वे सभी चौथ माता और विनायक जी के परम भक्त हो गए। राजा ने अपनी राजकुमारी का विवाह उस लड़के से करा दिया और उसे बहुत सारा धन-वैभव देकर विदा किया।

अब जब दूल्हा-दुल्हन दोनों अपने गांव पहुंचे तो लोगों ने जाकर बुढ़िया से कहा कि आपका बेटा अपनी बहू को साथ लेकर आ रहा है। फिर बोली अरे नहीं मेरे नसीब में बहू-बेटे का सुख कहाँ है? वह इतना कह ही रही थी कि दोनों लोग उसके चरणों में गिर पड़े और पुत्र अपनी माता से क्षमा याचना करने लगा और बोला कि चौथी माता की कृपा है कि आज मैं आपके सामने खड़ा हूं। उसके बाद उसने पूरे नगर में पिटवाया कि जितनी भी विवाहित स्त्रियां हो सके तो कन्याओं की माता भी चौथ माता का व्रत करें और हो सके तो पूरे 12 महीने तक चौथ करें, नहीं तो सब चार बड़ा चौथ करें, नहीं तो दोनों जरूर करेंगे। इसे करें।

pdfinbox.com

हे चौथ माता, जैसा आपने बूढ़ी माँ और उसके बेटे को दिया, वैसी ही कथा सुनाने वाले और सुनने वाले को दो।

pdfinbox.com

pdfinbox.com